

प्रेमचंदकालीन उपन्यासों पर समकालीन वैचारिक प्रभावों का मूल्यांकन

डॉ. मुकेश कुमार

असि. प्रो. हिंदी

विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कैराना, शामली

mukeshkrjnu@gmail.com

बीजशब्द : भावना, सामूहिक, गांधीवाद, अभिव्यक्ति, वैचारिकी, शोषण, हत्याकांड, समकालीन, परतंत्रता, राष्ट्रीय.

प्रेमचंद कालीन उपन्यासों में गुलामी के आतंक से मुक्ति का आह्वान है। इसके लिए उपन्यासकारों ने भारतीय अतीत के गौरव को जागृत करने वाले आख्यानों के साथ ही गांधी जी जैसे आजादी के समर्थकों के विचारों को भी अपने अपने उपन्यासों का विषय बनाया है, जिससे आजादी की भावना का विस्तार जन जन में हो सके। बीज शब्द गुलामी, शोषण, वैचारिकी, अभिव्यक्ति, समकालीन, राजतन्त्र, सामूहिकता, हत्याकांड, आंदोलन। प्रेमचंद-युग में मुख्य रूप से सामाजिक उपन्यासों की सर्जना हुई है, किन्तु प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से गांधी, मार्क्स तथा टॉल्स्टाय का वैचारिक प्रभाव पड़ा है, जिसकी अभिव्यक्ति प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' तथा निराला आदि के उपन्यासों में हुई है। इस युग के लेखक तत्कालीन समकालीन आंदोलनों से अत्यधिक प्रभावित हुए हैं। उन्होंने उस प्रभाव को अपने रंग में रंगकर प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद युग भारतीय परतंत्रता का युग था। वस्तुतः जब देश परतंत्र हो तो विदेशी शासकों के साथ संघर्ष करने के लिए सामूहिक संगठन की आवश्यकता होती है। संघर्ष में व्यक्ति का कोई मूल्य नहीं होता। उपन्यास के इस द्वितीय उत्थान के आरम्भ में देश जिन परिस्थितियों से गुजर रहा था वैसी परिस्थितियों में जो कुछ भी सोचा जा रहा था, वह सामूहिक दृष्टिकोण से ही सोचा जा सकता था। गांधीवाद समष्टि का विकास चाहता था, समाज के कल्याण में ही व्यक्ति का कल्याण है। यही भावना उन जन-आंदोलनों के साथ थी। राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के पश्चात् सन 1919 में सर्वप्रथम गांधीजी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन सम्पूर्ण भारतीय जनता का आंदोलन बना। इससे पूर्व बंग-भंग आंदोलन मुख्यतः बंगाल तक ही सीमित था। गांधीजी सत्याग्रह युद्ध-पद्धति पर दमनकारी रोलेट एक्ट का विरोध कर रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में यह पहला अवसर था कि राष्ट्रीय नेता को जनता का इतना व्यापक समर्थन मिला, जिसे देखकर सरकार भी आश्चर्य में पड़ गई। जनता के उत्साह ने हिंसात्मक मार्ग पकड़ा तथा सरकार ने पंजाब हत्याकांड रच डाला। फलतः गांधीजी को यह कहना पड़ा कि उन्होंने सत्याग्रह आंदोलन छोड़कर हिमालय के समान गलती की और आंदोलन को वापस ले लिया।

सन 1921 में पुनः कांग्रेस ने गांधीजी के नेतृत्व में पंजाब हत्याकांड तथा खिलाफत के लिए असहयोग आंदोलन चलाया। इसमें मजदूर तथा नारी वर्ग ने सक्रिय रूप से भाग लिया। ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीति के कारण राष्ट्रीय एकता बिखर गयी तथा कुछ वर्षों के लिए गांधीजी को यह आंदोलन स्थगित करना पड़ा। इसके पश्चात् गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा हरिजन-उद्धार का व्रत लिया। इस प्रकार गांधीजी ने कांग्रेस का नेतृत्व किया तथा अनेक सामाजिक आंदोलनों को जन्म दिया। जिस समय महात्मा गांधी तथा अन्य नेता राजनीतिक क्षेत्र में कार्य संपादित कर रहे थे, उस समय हिंदी के साहित्यकार भी अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहे थे। गांधीजी का वैचारिक प्रभाव प्रेमचंद युगीन उपन्यासों पर पड़ा। आदर्शवादी विचारधारा की मूल भूत मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति में निश्चय ही कुछ न कुछ अंश सत्गुणों का है और यदि बुरे से बुरे व्यक्ति को ज्ञान का प्रकाश मिल सके तो महान बन सकता है। हिन्दी के उपन्यासकार समकालीन युग में होने के कारण गांधीजी के महान व्यक्तित्व और दर्शन से प्रभावित रहे। उनके उपन्यासों में गांधीवादी पात्रों का चरित्र-चित्रण हुआ है तथा गांधीवादी दर्शन के आधार पर नवीन नैतिक तथा आदर्श मूल्यों की स्थापना हुई है। हिन्दी उपन्यासकारों में प्रेमचंद पर गांधी-दर्शन का विशेष प्रभाव पड़ा है।³ प्रेमचंद की औपन्यासिक कृतियों पर गांधीवाद का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है। डॉ. रामदीन गुप्त ने गांधीवादी प्रभाव की विशद विवेचना करते हुए लिखा है— 'अपने युग के सच्चे और जीवंत प्रतिनिधि होने के कारण प्रेमचंद की रचनाएँ अपने युग के तीन चरणों— प्राक् गांधी-युग, गांधी-युग और उत्तरगांधी-युग का वास्तविक प्रतिनिधित्व करती हैं। उनके तथाकथित सामाजिक उपन्यास पर ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज इत्यादि संस्थाओं के सामूहिक तथा दूसरे समाज-सुधारकों के व्यक्तिगत

प्रयत्नों से अवतरित उस सामाजिक जागृति के परिचायक हैं जो गांधीजी की राजनीतिक चेतना की पूर्वगामिनी थी। दूसरी ओर अपने राजनीतिक उपन्यासों में वे कांग्रेस तथा महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आंदोलन की विभिन्न हलचलों से प्रभावित हैं।⁴

जहाँ तक प्रेमचंद के गांधी युगीन उपन्यासों का प्रश्न है, हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि उनके प्रमुख औपन्यासिक पात्र गांधी के विचारों से पूर्णतः प्रभावित हैं। प्रेमाश्रम का प्रेमशंकर, रंगभूमि का सूरदास, कायाकल्प का चक्रधर तथा अमरकांत तो गांधी जी के ही राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति देते हैं। ये दोनों पात्र गांधीवादी व्यवहारों से धनिया सिंह तथा कालेखों जैसे निकृष्ट व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन करते हैं। लेखक अमरकांत के संबंध में लिखता है कि 'इस मानसिक संकट में कालेखों की प्रतिमा उसके समक्ष जाकर खड़ी हुई। उसे आभास हुआ कि वह उससे कह रही है— 'ईश्वर की शरण में जा। वहीं तुम्हें प्रकाश मिलेगा।'⁵ गांधी-दर्शन का मूल आशय यह है कि यदि धनिया सिंह तथा कालेखों जैसे व्यक्तियों का हृदय परिवर्तन किया जा सकता है, तो समाज तथा राष्ट्र को परिष्कृत क्यों नहीं किया जा सकता? "रंगभूमि" के सूरदास का सत्याग्रहगांधीजी की ही देन है। गांधीजी जाति-पांति में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने हिंदू मुसलमानों की एकता के लिए प्राणों की बाजी लगा दी। रंगभूमि में विनय सिंह तथा सोफिया का आध्यात्मिक प्रेम तथा कर्मभूमि में अमरकांत तथा सकीना के प्रेम के चित्रण की पृष्ठभूमि में गांधीवादी प्रभाव है। वर्तमान समाज-व्यवस्था का कलंक चिन्ह समझना चाहिए। जमींदार को समझना चाहिए कि वह प्रजा का मालिक नहीं, वरन् उसका सेवक है। यही उसके अस्तित्व का उद्देश्य और हेतु है। अन्यथा उसके संसार में उसकी कोई जरूरत न थी, बिना समाज के संगठन में कोई बाधा न पड़ती। वह इसलिए नहीं है कि प्रजा और पसीने की कमाई को विलास विषय-भोग में उड़ाये, उनके टूटे-फूटे झोपड़ों के सामने अपना ऊँचा महल खड़ा करे।⁶ उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रेमचंद-युगीन उपन्यासकारों पर गांधी का वैचारिक प्रभाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है। प्रेमचंद-युग के सामाजिक उपन्यासों पर मार्क्सवाद का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने चंद हसीनों के ख्वाब में भी हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया है। हिंदू-मुस्लिम दंगे में मुरारी कृष्ण की हत्या हो जाती है, लेकिन नर्गिस उसे ही पति मानती है और हिंदू धर्म को स्वीकार कर लेती है। डॉ. लक्ष्मीकांत सिन्हा ने 'रंगभूमि' के सूरदास में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है, "सूरदास पर गांधीवाद की पूरी छाप देखी जा सकती है। वह अहिंसावादी तो थे ही, सच्चे ही सत्याग्रही के रूप में भी अधिक सफल है। उसकी सहायता में एकत्र जनता को वह लड़ने से मना करता है।" ⁷ इस उपन्यास का रचनाकाल 1925 है, जब गांधीजी का राजनीतिक आंदोलन अपने उत्कर्ष पर था। हम यह भी जानते हैं कि 1921 में उनका असहयोग आंदोलन असफल भी हो गया था। गांधीजी ने जिस सत्य और अहिंसा के आधार पर सत्याग्रह का बीजारोपण किया था, उसे ही सफलता से रखने का श्रेय रंगभूमि के सूरदास को है। गांधीजी का यही विश्वास था कि अंत में सत्य की विजय होती है और यही मनोबल सूरदास का था।⁸

प्रेमचंद ने गांधीवादी दर्शनों के सामंजस्य के आधार पर जमींदारी प्रथा और उसके कर्णधारों को खूब कोसा है। वे लिखते हैं— "भूमि या तो ईश्वर की है, जिसने इसकी सृष्टि की या किसान की, जो ईश्वरीय इच्छा के अनुसार इसका उपयोग करता है। राजा देश की रक्षा करता है, इसलिए उसे किसानों से कर लेने का अधिकार है, चाहे प्रत्यक्ष रूप में ले या कोई इससे कम आपत्तिजनक व्यवस्था करे। अगर किसी अन्य वर्ग या श्रेणी को मीरास, मिल्कियत, जागीर, अधिकार के नाम पर किसानों को अपना भोग्य पदार्थ बनाने की स्वच्छंदता दी जाती है " ⁹ तो इस प्रकार मार्क्स का आंदोलन भी जो मुख्यतः आर्थिक पहलुओं पर आधारित था, सामाजिक दृष्टिकोण से सोचता था। अर्थ की विषमता के कारण पूंजीपतियों के विरुद्ध मार्क्स ने भी वर्ग संघर्ष को प्रोत्साहन दिया था। "संसार में मार्क्स एवं फ्रायड का अवतरण केवल वैयक्तिक, सामाजिक या राजनीतिक दृष्टिकोण से भी विशेष महत्व का है। मार्क्स के आगमन से आर्थिक मान्यताओं को जो नया मूल्य मिला, उसने संसार भर की आर्थिक समस्याओं को एक नया मोड़ दिया। परंपरा से पीड़ित, आर्थिक दृष्टिकोण से दलित जीवन को एक नई आशा का संचार होने लगा। संसार का कोना-कोना आर्थिक स्वतंत्रता के लिए अंगड़ाई लेने लगा। समाज में धनी और निर्धन का संघर्ष शुरू हुआ।"¹⁰ समानता को विशेष महत्व देता है। इस द्वंदात्मक संघर्ष के चित्रण में इसलिए यथार्थता आई। मार्क्स का आंदोलन प्रधानतः आर्थिक दृष्टियों पर आधारित था। अर्थ की असमानता के कारण ही मार्क्स ने पूंजीपतियों के विरुद्ध वर्ग-संघर्ष प्रारंभ किया था, जिसका चित्रण प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों में उपलब्ध होता है, किन्तु इससे भी महान उसकी साहित्यिक देन है। 'यथार्थवादी दृष्टि को साहित्य में इतने व्यापक रूप में प्रतिपादित करने का श्रेय मार्क्स को है।' उसने इतिहास के वर्ग-संघर्ष को सिद्ध किया। वह संसार में आर्थिक

उसकी मूल जड़ सत्य पर आधारित जो कुछ था प्रत्यक्ष था और इससे साहित्यिक विचारों को यथार्थ छोड़कर जाना ही कहा था?¹¹ संबंध कठोर जीवन से है। प्रेमचंद ने अपनी साहित्यगत मान्यताओं को स्पष्ट करते कहा कि 'साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्य की दीवार खड़ी होती है।'¹² यहां तक कि इस आधार पर उन्होंने साहित्य की परिभाषा भी की कहा 'साहित्य की बहुत सी परिभाषाएं की गई हैं, पर मेरे विचार से उनकी सर्व मान्य परिभाषा जीवन की आलोचना है। चाहे वह निबंध के रूप में, चाहे कहानियों के, चाहे काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।'¹³ इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रेमचंद पर मार्क्स का प्रभाव स्पष्ट रूप से पड़ा है। इसके अतिरिक्त इस युग के अन्य साहित्यकारों पर भी इस प्रभाव को देखा जा सकता है। यह उसी प्रभाव का परिणाम है कि भारत में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना हुई, जिसका संबंध अंतर्राष्ट्रीय संस्था का प्रथम अधिवेशन 1935 में हुआ था। पहली भारतीय कांग्रेस लेखनऊ में अप्रैल 1936 में हुई, इसके सभापति प्रेमचंद थे।¹⁴ इस प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना का परिणाम यह हुआ कि क्या कविता, क्या कहानी, क्या उपन्यास साहित्य की प्रायः सभी विधाओं पर मार्क्स का वैचारिक प्रभाव पड़ा। साहित्य का जीवन से घनिष्ठ संबंध जोड़ा गया और इस आधार पर साहित्य के नये मूल्य निर्धारित किये गए। साहित्य अब कल्पना-जगत की वस्तु नहीं कर यथार्थवादी भूमि पर विचरण करने लगा और उसने अंधविश्वासों एवं रूढ़ियों का परित्याग किया। मार्क्स ने यह स्वीकार किया कि प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों पर प्रत्यक्ष रूप से उपरोक्त आंदोलन का प्रभाव पड़ा। सर्वहारा वर्ग का चित्रण, पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के प्रति विद्रोह, आर्थिक समानता आदि इस युग के उपन्यासकारों के प्रमुख विषय रहे। इसके अतिरिक्त दहेज प्रथा, विधवा विवाह, अंधविश्वास, बेमेल विवाह, वेश्या समस्या, घूसखोरी तथा मजदूर समस्या आदि की भी व्याख्या की गई। प्रेमचंद ने लिखा है- 'रक्त और मांस तो मजदूर ही जलाते हैं, जिसे देखों कंकाल बना हुआ है।'¹⁵ उसका बस चलता तो आज धनवानों का अंत कर देता, जो संसार को नर्क बनाये हुए हैं।'¹⁶ नहीं, हमें रिश्त देना मंजूर नहीं, हम न्याय के लिए खड़े हैं, हमारे पास न्याय का बल है, हम उसी के बल से विजय पाएंगे।'¹⁷ इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में प्रगतिशील विचारों को ही स्वीकार किया है। 'प्रसाद' ने कंकाल में धर्म के नाम पर किये गये पापों का अत्यंत सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। इसके अतिरिक्त उन्होंने प्रेम, विवाह तथा यौन संबंधी समस्याओं को भी अपनी कृतियों का उपजीव्य बनाया है। 'तितली' और 'कंकाल' दोनों ही उपन्यासों में प्रसाद ने सामाजिक समस्याओं को ही महत्व प्रदान किया है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मार्क्स का वैचारिक प्रभाव पड़ा है। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों की संरचना में अधिसंख्य लेखकों पर टालस्टाय, बाल्जाक तथा डायस्टोव्स्की का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। टालस्टाय की परिगणना विश्व के महान उपन्यासकारों एवं विचारकों में की जाती है। टालस्टाय ने 'कला, कला के लिए' सिद्धांत का विरोध किया और सत्य, यथार्थ एवं मानव-जीवन से संयुक्त कला-संबंधी अपनी मौलिक उद्भावनाओं को प्रस्तुत किया। कला और साहित्य को लेकर 'कला क्या है' पुस्तक में टालस्टाय ने इस संदर्भ में जो अपने विचार प्रकट किये हैं, उनका सार्वभौम महत्व है और जिसका प्रभाव विश्व के अनेक देशों के साहित्यकारों पर पड़ा है। उन्होंने कला की रचना-प्रक्रिया से लेकर रसोद्बोधन की प्रक्रिया तक सभी समस्याओं पर विचार करते हुए साहित्य में मानववाद, सत्य और यथार्थ के उच्च आदर्शों की स्थापना की और कला-साहित्य को कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के घेरे से बाहर निकालकर जन-सामान्य तक पहुंचाने पर जोर दिया।¹⁸ टालस्टाय के अनुसार सर्वांगपूर्ण कला-कृति वही होती है, जिसमें शिव, सुंदर और सत्य की श्रेष्ठतम सीमायें परस्पर मिलकर पूर्ण सामंजस्य स्थापित कर सकी हों।¹⁹ उसकी दृष्टि में कला ईश्वर की रहस्यमयी भावना की अभिव्यक्ति नहीं है, न वह ऐसी क्रीड़ा है, जिसमें मनुष्य अपनी संचित शक्ति के अतिरेक का उत्सर्ग करता है, न केवल वह आनंद है, जैसा कि विभिन्न विचार-धारा के लोग कहते हैं। वह तो मानव-मानव में ऐक्य स्थापना का साधन है, जिसमें उसका कल्याण और प्रगति निहित है।²⁰ सर्वप्रथम यथार्थवादी उपन्यास प्रसाद कृत 'कंकाल' है। लेखक ने कंकाल के नायक विजय तथा मंगल देव की पृष्ठभूमि पर जो सामाजिक यथार्थवादी चित्र प्रस्तुत किया है, वह हिंदी साहित्य के लिए आज भी दुर्लभ है। कंकाल के नायक विजय ने समाज से विद्रोह किया, दाने-दाने को तड़पता रहा- भीख मांगता रहा, उसके जीवित रहते ही उसके माता-पिता ने दत्तक पुत्र भी गोद लिया और उसी विजय के कंकाल की अंत्येष्टि के लिए यमुना को दूसरे से रुपया मांगा पड़ा। इसके साथ ही धार्मिक तीर्थों का अनावरण प्रसादजी ने इस उपन्यास के माध्यम से किया है।

प्रेमचंद ने अपने महत्तम कृति 'गोदान' तथा 'मंगलसूत्र' की संरचना यथार्थवाद की पृष्ठभूमि पर की है। हिंदी का इस प्रकार यथार्थ को समक्ष रखते हुए सुंदर से सुंदरतर स्थितियों को समाज के सम्मुख प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों ने प्रस्तुत किया। यही कारण है कि वे जनता के हृदय को स्पर्श करने में सफल हुए। वे अपने युग की समस्याओं और संघर्षों के दर्शक मात्र ही नहीं, अपितु इनका अनुराग एवं सहानुभूति जनता के व्यापक संघर्ष, वेदना और पीड़ा के प्रति भी था। प्रेमचंद युगीन उपन्यासों पर टालस्टाय का वैचारिक प्रभाव पड़ा है। प्रेमचंद आदर्श और यथार्थ के प्रति अत्यंत सजग थे। उन्होंने दोनों के महत्व को स्वीकार करते हुए लिखा है- 'यथार्थवाद यदि हमारी आंखें खोल देता है, तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान पर पहुंचा देता है, लेकिन डॉ. चंडीप्रसाद जोशी (पृ- 194) जहां आदर्शवाद में यह सुख है, वह इस बात की शंका भी है कि हम ऐसे चरित्र को न चित्रित कर बैठें, जो सिद्धांतों की मूर्तिमात्र हो, जिसमें जीवन न हो। किसी देवता की कामना करना मुश्किल नहीं, लेकिन उस देवता में प्राण प्रतिष्ठा करना मुश्किल है।²¹ आदर्श और यथार्थ के संबंध में प्रेमचंद जी का दृष्टिकोण समन्वयवादी का था। इसीलिए उन्होंने लिखा है- 'वही उपन्यास उच्च कोटि के समझे जाते हैं, जहां यथार्थ और आदर्श का समावेश हो, उसे आप आदर्शोन्मुख यथार्थवाद कह सकते हैं। आदर्श को सजीव बनाने ही के लिए यथार्थ का उपाय होना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास; डा० लक्ष्मीकांत सिन्हा, पृष्ठ-178.
2. हिन्दी उपन्यास: समाजशास्त्रीय विवेचन, डा० चंडी प्रसाद जोशी, पृ०-306.
3. वही। -- पृष्ठ-309.
4. प्रेमचंद और गांधीवाद; डा० रामदेव गुप्त, पृ०-141.
5. कर्मभूमि; प्रेमचंद - पृष्ठ-383.
6. वही। -- पृष्ठ-384.
7. चंद हसीनों के खतूत; पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र, पृष्ठ-138.
8. हिन्दी उपन्यास साहित्य का उद्भव और विकास, डा० लक्ष्मीकांत सिन्हा, पृ०-179.
9. वही। पृष्ठ-171.
10. वही। पृष्ठ-177.
11. वही। पृष्ठ-169.
12. नया हिन्दी साहित्य - एक भूमिका; प्रकाश चंद्र गुप्त, पृष्ठ-24.
13. वही। पृष्ठ-20.
14. कर्मभूमि; प्रेमचंद- पृष्ठ-119.
15. आलोचना के सिद्धांत; शिवदान सिंह चौहान, पृष्ठ-09.
16. कला क्या है। टॉलस्टॉय। पृष्ठ-33.
17. वही। -- पृष्ठ-81.
18. वही। -- पृष्ठ-82.
19. वही। -- पृष्ठ-21.
20. हिन्दी उपन्यास: समाजशास्त्रीय विवेचन, डा० चण्डी प्रसाद जोशी। पृष्ठ-289.
21. कुछ विचार; प्रेमचंद। पृष्ठ-50.